E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

वेणीसंहार के पञ्चम अंक का सारांश

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

संजय धृतराष्ट्र तथा गान्धारी के साथ दुःखी दुर्योधन के पास पहुँचते हैं। दोनों पुत्र को टटोल कर आलिङ्गन करते हैं। दुर्योधन अपने को पापी,अपनी आँखों के सामने भाइयों की हत्या होते देखने वाला, सुतक्षयकारी तथा माता-पिता को केवल रुलाने वाला पुत्र बताकर ग्लानि करता है। पुत्रों के विनाश से व्याकुल हुए धृतराष्ट्र और गान्धारी दुर्योधन को पाण्डवों से सन्धि कर लेने के लिए समझाते हैं। परन्तु दुर्योधन इसके लिए तैयार नहीं होता। वह कहता है कि मेरी ओर से सन्धि का प्रस्ताव लज्जास्पद है-

तं दुःशासनशोणिताशनमरिं भिन्नं गदाकोटिना।

भीमं दिक्षु न विक्षिपामि कृपणः सन्धिं विदध्यामहम्।।

इस पर धृतराष्ट्र कहता है कि यदि सन्धि नहीं करना है तो शत्रु को गूढ़ उपाय से मारो। दुर्योधन ऐसा करने के लिए भी सहमत नहीं होता है।

इसी बीच शल्य खाली रथ से अपने पड़ाव की ओर जाते हुए दिखाई पड़ता है। उसे देखकर दुर्योधन का रहा-सहा धैर्य भी छूट जाता है और वह अनुमान कर लेता है कि अब कर्ण अवश्य मारे गये हैं। घटना का अनुसंधान करने से पता चलता है कि कि संग्राम करते हुए कर्ण के रथ का चक्र अचानक धरती में धँस गया और जब कर्ण उसे निकालने लगा तभी अर्जुन ने उस पर शस्त्राघात करके उसका सिर काट डाला। यह सुनकर दुर्योधन विलाप करने लगता है, साथ ही वह कर्ण को मारने वाले अर्जुन का वध करने के लिए चल पड़ता है। आगे के युद्ध के लिए शल्य सेनापति बनाया जाता है। उस समय संजय के मुंह से निकल पड़ता है-

गते भीष्मे हते द्रोणे कर्णे च विनिपातिते।

आशा बलवती राजञ्शल्यो जेष्यति पाण्डवान्।।

इतने में भीम और अर्जुन दुर्योधन को खोजते हुए वहीं आ जाते हैं। माता पिता के सामने ही दुर्योधन को पाण्डवों के साथ खोटी-खरी कहनी-सुननी पड़ती है। इसी बीच नेपथ्य से भीम और अर्जुन के लिए युधिष्ठिर की आज्ञा सुनाई पड़ती है कि अब युद्ध समाप्ति का समय हो गया है, इसलिए सेनाएँ वापिस लौटा ली जायँ। युधिष्ठिर की आज्ञा का पालन करने के लिए भीम और अर्जुन लौट पड़ते हैं। उसके जाने के पश्चात् अश्वत्थामा आता है, जिसे कर्ण का द्रोही होने के कारण दुर्योधन बढ़ावा नहीं देता है और कहता है-

अवसानेऽङ्गराजस्य योद्धव्यं भवता किल।

ममाप्यन्तं परीक्षस्व कः कर्णः कः सुयोधनः।।

इस पर अश्वत्थामा अपमानित होकर चला जाता है, परन्तु धृतराष्ट्र उसके प्रति अपने तथा गान्धारी के वात्सल्य का और उसके पिता के अपमान का स्मरण दिलाकर भ्रातृशोक से विक्षिप्तचित्त दुर्योधन की बात का बुरा न मानने का संजय द्वारा संदेश भेजता है। दुर्योधन युद्धस्थल की ओर चल पड़ता है। धृतराष्ट्र और गान्धारी शल्य के शिविर की मोर चले जाते हैं।